



Haathon Haath Phoophi Se Sulh Kar Li (Hindi)

# हाथों हाथ फूफी से सुल्ह कर ली

मअ रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक के फ़ज़ाइल



शैख़े तुरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अज़्ज़ार क़ादिरि २-ज़वी كاتب بركاته  
العسائيه



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज् : शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ  
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **اللّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت  
नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना  
व बकीअ  
व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## हाथों हाथ फूफी से सुल्ह कर ली

येह रिसाला ( हाथों हाथ फूफी से सुल्ह कर ली )

शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल खत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

**राबिता : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,  
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## हाथों हाथ फूफी से सुल्ह कर ली

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप येहरिसाला ( 23 सफ़हात ) मुकम्मल पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप को मुफ़ीद तरीन मा'लूमात मिलेंगी ।

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

#### ( **صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ** ) की फ़ज़ीलत )

हज़रते सय्यिदुना अबुल मुज़फ़्फ़र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़य्याम समर क़न्दी **عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साहिब नज़र आए और उन्होंने ने कहा : “मेरे साथ आओ ।” मैं उन के साथ हो लिया । मुझे गुमान हुआ कि येह हज़रते सय्यिदुना **ख़िज़र** **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** हैं । मेरे इस्तिफ़सार (या'नी पूछने) पर उन्होंने ने अपना नाम **ख़िज़र** बताया, उन के साथ एक और बुजुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : येह **इल्य़ास** **عَزَّوَجَلَّ** हैं । मैं ने अर्ज़ की : **अल्लाह** : आप पर रहमत फ़रमाए, क्या आप दोनों हज़रात ने सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ियारत की है ? उन्होंने ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उरुस पर दस (स) रहमतें भेजता है।

फ़रमाया : हां। मैं ने अर्ज़ की : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना हुवा इशदि पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं। उन्होंने ने फ़रमाया कि हम ने रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते सुना कि जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल निफ़ाक़ से इसी तरह पाक किया जाता है जिस तरह पानी से कपड़ा पाक किया जाता है। नीज़ जो शख्स “صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ” पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रहमत के 70 दरवाजे खोल लेता है। (الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص 277، جَذَبُ الْقُلُوبِ ص 235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## हाथों हाथ फूफी से सुल्ह कर ली

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल बात बात पर लोग रिश्तेदारियां काट कर रख देते हैं, लिहाज़ा आपस में महब्वत की फ़ज़ा काइम होने की ख़्वाहिश की अच्छी निय्यत के साथ सवाब कमाने के लिये रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक के जिम्न में नेकी की दा'वत पेश करते हुए म-दनी फूल पेश करने की सअय करता हूं : हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ एक मर्तबा सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अहादीसे मुबा-रका बयान फ़रमा रहे थे, इस दौरान फ़रमाया : हर कातेए रेहूम (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हमारी महफ़िल से उठ जाए। एक नौ जवान उठ कर अपनी फूफी के हां गया जिस से उस का कई साल पुराना झगड़ा था, जब दोनों एक दूसरे से राजी हो गए तो उस नौ जवान से फूफी ने कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख़्स की नाक ख़ाक़ आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वाह  
मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (ترمذی)

आख़िर ऐसा क्यूं हुवा ? (या'नी सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के ए'लान की क्या हिक्मत है ?) नौ जवान ने हाज़िर हो कर जब पूछा तो हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से येह सुना है : “जिस क़ौम में कातेए रेह्म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हो, उस क़ौम पर अल्लाह की रहमत का नुज़ूल नहीं होता।”

(الزَّوْجُرُوعُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكِبَائِرِ ج ٢ ص ١٥٣)

### सास बहू में सुल्ह का राज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! पहले के मुसल्मान किस क़दर ख़ौफ़े खुदा रखने वाले हुवा करते थे ! खुश नसीब नौ जवान ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के डर के सबब फ़ौरन अपनी फूफी के पास खुद हाज़िर हो कर सुल्ह की तरकीब कर ली। सभी को चाहिये कि ग़ौर करें कि ख़ानदान में किस किस से अनबन है जब मा'लूम हो जाए तो अब अगर शर-ई उज़्र न हो तो फ़ौरन नाराज़ रिश्तेदारों से “सुल्ह व सफ़ाई” की तरकीब शुरूअ कर दें। अगर झुकना भी पड़े तो बेशक रिज़ाए इलाही के लिये झुक जाएं, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ** सर बुलन्दी पाएंगे। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : **“جَوَّالِهُ مَنْ تَوَاضَعَ لِلَّهِ رَفَعَهُ اللهُ - : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** जो अल्लाह के लिये आजिज़ी करता है अल्लाह तआला उसे बुलन्दी अता फ़रमाता है।” (شَعَبُ الْإِيمَانِ ج ٦ ص ٢٧٦ حديث ٨١٤٠) अपने घरों और मुआ-शरे को अमन का गहवारा बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये नीज़ म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये। आप की तरगीब व तहरीस

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْلَمُ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़े अल्लाह ﷻ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (طریق)

के लिये एक म-दनी बहार पेश करता हूं, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि तवील अर्से से मेरी जौजा और वालिदा या'नी सास बहू में ख़ूब ठनी हुई थी, नतीजतन जौजा रूठ कर मयके जा बैठी। मैं सख़्त परेशान था, समझ में नहीं आता था कि इस मस्अले को कैसे हल करूं। ऐसे में दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा "म-दनी मुजा-करे" की VCD "घर अमन का गहवारा कैसे बने!" मेरे हाथ आई। मौजूअ देखा तो बड़ी उम्मीद के साथ येह VCD खुद भी देखी और अपनी वालिदाए मोह-त-रमा को भी दिखाई और एक VCD अपने सुसराल भी भेज दी। मेरी वालिदा को येह VCD इतनी पसन्द आई कि उन्होंने ने इसे दो बार देखा और हैरत अंगेज तौर पर मुझ से फ़रमाने लगीं: "चल बेटा! तेरे सुसराल चलते हैं।" मैं ने सुकून का सांस लिया कि लगता है जो काम मैं भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश के बा वुजूद न कर सका वोह इस VCD ने कर दिया। मेरे सुसराल पहुंच कर वालिदा साहिबा ने बड़ी महबूबत से मेरी जौजा को मनाया और उसे वापस घर ले आई। दूसरी जानिब मेरी जौजा ने भी मुस्बत तर्जे अमल का मुजा-हरा किया और घर पहुंचने के बा'द दूसरे ही दिन अपनी सास (या'नी मेरी वालिदा) से कहने लगीं: अम्मीजान! मेरा कमरा बहुत बड़ा है, जब कि दीगर घर वाले जिस कमरे में रहते हैं वोह क़दरे छोटा है, आप मेरा कमरा ले लीजिये और मैं उस छोटे कमरे में रिहाइश इख़्तियार कर लेती हूं। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ हमारा घर जो फ़ितने और फ़साद का शिकार था, दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से अमन का गहवारा बन गया। (म-दनी मुजा-करे की मज़कूरा VCD

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया। (अब्दुल)

“घर अमन का गहवारा कैसे बने” मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ली जा सकती और दा'वते इस्लामी की वेब साइट [www.dawateislami.net](http://www.dawateislami.net) पर देखी और सुनी जा सकती है।

## सिलए रेहूमी की ता 'रीफ़

सिला के मा'ना हैं : **إِيصَالٌ نَوْعٌ مِنْ أَنْوَاعِ الْإِحْسَانِ** - या'नी किसी भी किस्म की भलाई और एहसान करना। (الزّواجر ج २ ص १०६) और रेहूम से मुराद : कराबत, रिश्तेदारी है। (لسانُ العرب ج १ ص १४७) “बहारे शरीअत” में है : **सिलए रेहूम के मा'ना : रिश्ते को जोड़ना है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक (या'नी भलाई) करना।**

(बहारे शरीअत, जि. 13, स. 558)

रिज़ाए इलाही के लिये रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहूमी और इन की बद सुलूकी पर इन्हें दर गुज़र करना एक अज़ीम अख़्लाकी ख़ूबी है और **अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ** के यहां इस का बड़ा सवाब है।

## रिश्तेदारों के माली व अख़्लाकी हुकूक अदा कीजिये

पारह 15 सूरए बनी इसराईल आयत नम्बर 26 में अल्लाह ईशार्द फ़रमाता है :

**وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ**

(प १०, बनी इसराईल: २६)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रिश्तेदारों को उन का हक़ दे।

**सदरुल अफ़ज़िल** हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي “**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**” में इस आयते करीमा के तहूत लिखते हैं : इन के साथ सिलए रेहूमी कर और महबबत और मेलजोल और ख़बर गीरी और मौक़अ पर मदद और हुस्ने मुआ-शरत। मस्अला : और अगर वोह महारिम (या'नी

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुब्द व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (सूच़ाव)।

ऐसा करीबी रिश्तेदार कि अगर उन में से जिस किसी को भी मर्द और दूसरे को औरत फ़र्ज किया जाए तो निकाह हमेशा के लिये हराम हो जैसे बाप, मां, बेटा, बेटी, भाई, बहन, चचा, फूफी, मामूं, ख़ाला, भान्जा, भान्जी वगैरा) में से हों और मोहताज हो जाएं तो उन का खर्च उठाना येह भी उन का हक़ है और साहिबे इस्तिताअत रिश्तेदार पर लाज़िम है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 530, मल्बूआ मक-त-बतुल मदीना)

## सिलए रेहमी करने के 10 फ़ाएदे

हज़रते सय्यिदुना फ़कीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : सिलए रेहमी करने के 10 फ़ाएदे हैं : ❁ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा हासिल होती है ❁ लोगों की खुशी का सबब है ❁ फ़िरिशतों को मसरत होती है ❁ मुसल्मानों की तरफ़ से उस शख़्स की ता'रीफ़ होती है ❁ शैतान को इस से रन्ज पहुंचता है ❁ उम्र बढ़ती है ❁ रिज़्क में ब-र-कत होती है ❁ फ़ौत हो जाने वाले आबाओ अज्दाद (या'नी मुसल्मान बाप दादा) खुश होते हैं ❁ आपस में महब्बत बढ़ती है ❁ वफ़ात के बा'द इस के सवाब में इज़ाफ़ा हो जाता है, क्यूं कि लोग उस के हक़ में दुआए खैर करते हैं।

(تنبيه الغافلين ص ٧٣)

## तोड़ते नहीं, जोड़ते और सिलए रेहमी करते हैं

पारह 13 सू-रतुरा'द आयत नम्बर 21 में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमान है :

وَالَّذِينَ يَبُلُونُ مَا أَمَرَأللَّهُ  
بِهِ أَنْ يُؤْصَلَ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

**सदरुल अफ़ज़िल** हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي “**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**” में इस आयते करीमा के तहत लिखते हैं : या'नी अल्लाह की तमाम किताबों और उस के कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और बा'ज को मान कर बा'ज से मुन्किर हो कर उन में तफ़ीक़ नहीं करते या येह मा'ना हैं कि : हुकूके क़राबत की रिआयत रखते हैं और रिश्ता क़त्अ नहीं करते। इसी में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़राबतें और ईमानी क़राबतें भी दाख़िल हैं, सादाते किराम का एहतिराम और मुसलमानों के साथ मुवद्दत (या'नी महब्बत) व एहसान और उन की मदद और उन की तरफ़ से मुदा-फ़-अत और उन के साथ शफ़क़त और सलाम व दुआ और मुसलमान मरीजों की इयादत और अपने दोस्तों, ख़ादिमों, हमसायों (और) सफ़र के साथियों के हुकूक की रिआयत भी इस में दाख़िल है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 482, मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना)

## बेहतरिनी आदमी की ख़ुसूसिय्यात

**साहिबे** कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़्ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक मर्तबा मिम्बरे अक्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : “**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! लोगों में सब से अच्छा कौन है ?” फ़रमाया लोगों में से वोह शख्स सब से अच्छा है जो कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तकी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ करने वाला हो और सब से ज़ियादा सिलए रेहूमी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो। (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ١٠ ص ٤٠٢ حديث ٢٧٥٠٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ा अत करूंगा। (جمع الجوامع)

## तिलावत, परहेज़ गारी, नेकी की दा'वत और सिलए रेहूमी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब सवाब लूटने की निय्यत से बयान कर्दा हृदीसे मुबा-रका की रोशनी में कुछ “नेकी की दा'वत” पेश करने की सआदत हासिल करता हूं। इस रिवायत में सब से अच्छे आदमी की चार खुसूसिय्यात बयान की गई हैं : (1) ब कसरत तिलावत (2) ख़ूब परहेज़ गारी (3) सब से ज़ियादा नेकी की दा'वत देना और बुराई से मुमा-न-अत करना और (4) रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक। वाकेई येह चारों निहायत ही उम्दा सिफ़ात हैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ नसीब करे। आमीन। इन चारों के फ़ज़ाइल मुला-हज़ा हों ﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन कुरआन पढ़ने वाला आएगा तो कुरआन अर्ज़ करेगा : **या रब** عَزَّ وَجَلَّ ! इसे हुल्ला (या'नी जन्नत का लिबास) पहना। तो उसे **करामत का हुल्ला** (या'नी बुजुर्गी का जन्नती लिबास) पहनाया जाएगा। फिर कुरआन अर्ज़ करेगा : **“या रब** عَزَّ وَجَلَّ ! इस में इज़ाफ़ा फ़रमा” तो उसे **करामत का ताज** पहनाया जाएगा, फिर कुरआन अर्ज़ करेगा : **“या रब** عَزَّ وَजَلَّ ! इस से राज़ी हो जा।” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस से राज़ी हो जाएगा। फिर उस कुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा : कुरआन पढ़ता जा और जन्नत के द-रजात तै करता जा और हर आयत पर उसे एक ने'मत अता की जाएगी। (ترمذی ج ٤ ص ٤١٩ حديث ٢٩٢٤)

﴿2﴾ परहेज़ गारों को आख़िरत में काम्याबी की नवीद (या'नी खुश ख़बरी) सुनाई गई है चुनान्वे पारह 25 सू-रतुज़्ज़ुक्रुफ़ आयत नम्बर 35 में इर्शाद होता है :  
**और** : **كَنْزُ لِمَنْ إِيمَانَ** : **وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ** ﴿٣٥﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

आखिरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है। ﴿3﴾ हज़रते सय्यिदुना का 'बुल अहूबार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का इर्शाद है : "जन्नतुल फ़िरदौस खास उस शख़्स के लिये है जो الْمُنْكَرُ عَنْهُ وَيَهَى عَنْهُ" (या'नी नेकी का हुक़्म दे और बुराई से मन्अ करे)¹ ﴿4﴾ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जिसे येह पसन्द हो कि उस की उम्र और रिज़्क में इज़ाफ़ा कर दिया जाए तो उसे चाहिये कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करे और अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहूमी किया करे।²

### उम्र व रिज़्क में ज़ियादती के मा'ना

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1197 सफ़हहत पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द 3 सफ़हा 560 पर सदरुशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَرِي फ़रमाते हैं : हदीस में आया है कि "सिलए रेहूम से उम्र ज़ियादा होती है और रिज़्क में वुस्अत (या'नी ज़ियादती) होती है।" बा'ज उ-लमा ने इस हदीस को ज़ाहिर पर हम्ल किया है (या'नी हदीस के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं) या'नी यहां क़ज़ा मुअल्लक़ मुराद है क्यूं कि क़ज़ा मुबरम टल नहीं सकती।³

إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾ (پ ۱۱، یونس: ۴۹) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब उन का वा'दा आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें न आगे बढ़ें।

और बा'ज (उ-लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام) ने फ़रमाया कि

ل: تَنْبِيَهُ الْمُعْتَرِينَ ص ۲۳۶ ج: التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ۳ ص ۲۱۷ حَدِيثٌ ۱۶

3 : क़ज़ा से मुराद यहां किस्मत है। क़ज़ा की अक्साम और इस के बारे में तफ़्सीलात जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 14 ता 17 का मुता-लआ कीजिये, खुसूसन मजलिस, अल मदीनतुल इल्मिय्या की तरफ़ से दिये गए हवाशी बे मिसाल और मु-तअहद वसाविस का इलाज हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (बुख़ारी)

ज़ियादतिये उम्र का येह मतलब है कि मरने के बा'द भी इस का सवाब लिखा जाता है गोया वोह अब भी ज़िन्दा है या येह मुराद है कि मरने के बा'द भी उस का ज़िक्रे ख़ैर लोगों में बाक़ी रहता है। (रَدُّ الْمُحْتَرَج १११८)

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि सिलए रेहूमी करे (बुख़ारी १३६१) (१) क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के अर्श के साए में तीन क़िस्म के लोग होंगे, (उन में से एक है) सिलए रेहूमी करने वाला। (अल्फ़ुरदोस بماثور الخُطَاب ج २ ص ९९ حديث २०२६)

## उम्मुल मुअमिनीन हज़रते ज़ैनब और सिलए रेहूमी

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने हज़रते ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से ज़ियादा दीनदार, ज़ियादा परहेज़ गार, ज़ियादा सच्ची, ज़ियादा सिलए रेहूमी और ज़ियादा स-दक़ा करने वाली कोई औरत नहीं देखी। (मुसलम १३२०) (حديث २४६२)

## 10 हज़ार दिरहम रिश्तेदारों को बांट दिये

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उमर फ़ारूके आ'ज़म रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़िदमत में 10 हज़ार दिरहम भेजे तो उन्होंने ने येह रक़म अपने रिश्तेदारों को तक्सीम कर दी। (असद الغابة ج १ ص १४० مَلَخَصًا)

## रिश्तेदारों से तअल्लुक तोड़ने से बचिये

कुरआने पाक में इशादि बारी तआला है :

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ

وَالْأَسْرَ حَامٍ ط (پ، النساء: १)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह से डरो, जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

इस आयते मुबा-रका के तहत “तफ़्सीरे मज़हरी” में है : या’नी तुम क़त्ए रेहूमी (या’नी रिश्तेदारों से तअल्लुक़ तोड़ने) से बचो ।

(تفسير مظهری ج ۲ ص ۳)

**जान बूझ कर क़त्ए रेहूमी को जाइज़ समझना कुफ़्र है**  
 फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा । (بخاری ج ۴ ص ۹۷ حدیث ۵۹۸) हज़रते अल्लामा अली क़ारी हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : इस से मुराद येह है कि जो शख्स बिगैर किसी सबब और बिगैर किसी शुब्हे और क़त्ए रेहूमी के हराम होने के इल्म के बा वुजूद इसे हलाल और जाइज़ समझता हो वोह काफ़िर है, हमेशा जहन्नम में रहेगा और जन्नत में नहीं जाएगा, या येह मुराद है कि पहले जाने वालों के साथ जन्नत में नहीं जाएगा या येह मुराद है कि अज़ाब से नजात पाने वालों के साथ भी नहीं जाएगा (या’नी पहले सज़ा पाएगा फिर जाएगा) ।

(مرقاة ج ۷ تحت الحدیث ۴۹۲۲)

“तफ़्हीमुल बुख़ारी” में है : इस में इख़्तिलाफ़ नहीं कि सिलए रेहूमी वाजिब है और इस को क़त्अ करना कबीरा गुनाह है । सिलए रेहूमी के कुछ द-रजात हैं, कम अज़ कम द-रजा येह है कि नाराज़ी तर्क कर दे और सलाम व कलाम से सिला (या’नी अच्छा सुलूक) करे, कुदरत और हाज़त के इख़्तिलाफ़ से सिला (या’नी सुलूक) की मुख़्तलिफ़ हालतें हैं, बा’ज़ हाल में सिलए रेहूमी वाजिब है और बा’ज़ में मुस्तहब है, अगर बा’ज़ हालात में सिला किया और पूरी तरह न किया तो इस को क़त्ए रेहूमी नहीं कहते ।

(تفهیم البخاری ج ۹ ص ۲۲۱)

एक मा’लूमाती फ़तावा मुला-हज़ा फ़रमाइये, फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 13 सफ़हा 647 ता 648 पर है :

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

**हकीकी भाई को यह कहना : “तुम मेरे भाई नहीं हो”, कैसा ?**

**सुवाल :** अगर जैद हकीकी भाई बक्र को किसी साजिश से एक मजलिस में ब आवाजे बुलन्द कलिमाए तय्यिबा पढ़ कर कहे कि : “तुम मेरे भाई नहीं हो”, ऐसी सूरत में जैद पर ब मूजिबे शर-अ शरीफ़ कुछ कफ़ारा लाज़िम है ? अगर है तो क्या व किस क़दर ?

**जवाब :** अगर उस के भाई ने उस के साथ कोई मुआ-मला ख़िलाफ़े अख़ुव्वत किया जो भाई भाई से नहीं करता तो उस पर इस कहने में इल्ज़ाम नहीं कि इस नफी (या'नी इन्कार) से नफ़िये हकीकत (या'नी हकीकत से इन्कार) मुराद नहीं होती बल्कि नफ़िये समरा (है या'नी भाई होने की वजह से जैसा सुलूक करना चाहिये वैसा सुलूक नहीं किया) और ऐसा नहीं बल्कि बिला वजहे शर-ई यूं कहा तो तीन कबीरों का मुर-तकिब हुवा : (1) किज़्बे सरीह (या'नी खुला झूट) व (2) क़त्ए रेहूम (या'नी रिश्ता काटना) व (3) ईज़ाए मुस्लिम, इस पर तौबा फ़र्ज़ है और भाई से मुआफ़ी मांगनी लाज़िम। وَاللّٰهُ تَعَالَىٰ اَعْلَمُ।

**रिश्ता तोड़ने वाले की मौजू-दगी में रहमत नहीं उतरती**

“त-बरानी” में हज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ से मन्कूल है, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्क़द رَضِيَ اللهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ एक बार सुब्ह के वक़्त मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने फ़रमाया : मैं कातेए रेहूम (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) को अल्लाह की क़सम देता हूं कि वोह यहां से उठ जाए ताकि हम अल्लाह तआला से मग़िफ़रत की दुआ करें क्यूं कि कातेए रेहूम (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) पर आस्मान के दरवाजे बन्द रहते हैं। (या'नी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो रहमत नहीं उतरेगी और हमारी दुआ क़बूल नहीं होगी) (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ٩ ص ١٥٨ رقم ٨٧٩٣)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الإيمان)

## नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो ज़रा ज़रा सी बातों पर अपनी बहनों, बेटियों, फूफियों, ख़ालाओं, मामूओं, चचाओं, भतीजों, भान्जों वगैरा से क़त्ए रेहूमी कर लेते हैं, उन लोगों के लिये बयान कर्दा हदीसे पाक में इब्रत ही इब्रत है। मेरी म-दनी इल्लिजा है कि अगर आप की किसी रिश्तेदार से नाराज़ी है तो अगर्चे रिश्तेदार ही का कुसूर हो सुल्ह के लिये खुद पहल कीजिये और खुद आगे बढ़ कर ख़न्दा पेशानी के साथ उस से मिल कर तअल्लुकात संवार लीजिये।

## क़त्ए रेहूमी करने वाला मग़िफ़रत से महरूम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : पीर और जुमा'रात को अल्लाह तअला के हुज़ूर लोगों के आ'माल पेश होते हैं, तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आपस में अदावत रखने और क़त्ए रेहूमी करने वालों के इलावा सब की मग़िफ़रत फ़रमा देता है। (الْمُنَجَّمُ الْكَبِيرُ لِلْكَبْرَانِي ج ١ ص ١٦٧ حدیث ٤٠٩)

## अमानत और सिलए रेहूमी की शिकायत पर पकड़ होगी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “अमानत और सिलए रेहूमी को भेजा जाएगा तो वोह पुल सिरात के दाएं और बाएं जानिब खड़ी हो जाएंगी।” (مُسْلِمٌ ص ١٢٧ حدیث ٣٢٩) मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : येह इन दोनों वस्फ़ों की इन्तिहाई ता'जीम होगी कि इन दोनों को पुल सिरात के आस पास खड़ा किया जावेगा शफ़ाअत और शिकायत के लिये, कि इन की शफ़ाअत पर नजात, इन की शिकायत पर पकड़ होगी। इस फ़रमाने अ़ाली से मा'लूम हुवा कि इन्सान अमानत दारी और रिश्तेदारों के हुकूक की अदाएगी ज़रूर इख़्तियार करे कि इन दोनों में

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

कोताही करने पर सख़्त पकड़ है मगर इन की शफ़ाअत पर दोज़ख़ से नजात है इन की शिकायत पर वहां गिरता है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 424)

## तअल्लुकात तोड़ने की सज़ा ( हिकायत )

हज़रते सय्यिदुना फ़कीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي

“तम्बीहुल गाफ़िलीन” में नक्ल करते हैं, हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन सुलैम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : मक्कए मुकर्रमा رَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में एक नेक शख़्स खुरासान का रहने वाला था, लोग उस के पास अपनी अमानतें रखते थे, एक शख़्स उस के पास दस हज़ार अशरफ़ियां अमानत रखवा कर अपनी किसी ज़रूरत से सफ़र में चला गया, जब वोह वापस आया तो खुरासानी फ़ौत हो चुका था, उस के अहलो इयाल से अपनी अमानत का हाल पूछा : तो उन्होंने ने ला इल्मी जाहिर की, अमानत रखने वाले ने उ-लमाए मक्कए मुकर्रमा से पूछा कि मुझे क्या करना चाहिये ? उन्होंने ने कहा : “हम उम्मीद करते हैं कि वोह खुरासानी जन्मती होगा, तुम ऐसा करो कि आधी या तिहाई रात गुज़रने के बा’द ज़मज़म के कूएं पर जा कर उस का नाम ले कर आवाज़ देना और उस से पूछना ।” उस ने तीन रातें ऐसा ही किया, वहां से कोई जवाब न मिला, उस ने फिर जा कर उन उ-लमाए किराम को बताया, उन्होंने ने “إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ” पढ़ कर कहा : “हमें डर है कि वोह शायद जन्मती न हो,” तुम यमन चले जाओ वहां बुरहूत नामी वादी में एक कूआं है, उस पर पहुंच कर इसी तरह आवाज़ दो, उस ने ऐसा ही किया तो पहली ही आवाज़ में जवाब मिला कि मैं ने उस को घर में फुलां जगह दफ़न किया है और मैं ने अपने घर वालों के पास भी अमानत को नहीं रखा, मेरे लड़के के पास जाओ और



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अबु सूर)।

उस जगह को खोदो तुम्हें मिल जाएगा चुनान्चे उस ने ऐसा ही किया और माल मिल गया । मैं ने उस से दरयाफ़्त किया कि तू तो बहुत नेक आदमी था तू यहां पहुंच गया ? वोह बोला : मेरे कुछ रिश्तेदार खुरासान में थे जिन से मैं ने क़टए तअल्लुक़ (या'नी रिश्ता तोड़) कर रखा था इसी हालत में मेरी मौत आ गई इस सबब से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे येह सज़ा दी और इस मक़ाम पर पहुंचा दिया । (تنبيه الغافلين ص ٧٢ مَلَخَمًا)

### किन रिश्तेदारों से सिला वाजिब है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1196 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द 3 सफ़हा 558 ता 559 पर है : जिन रिश्ते वालों के साथ सिला (रेहूम) वाजिब है वोह कौन हैं ? बा'ज़ इ-लमा ने फ़रमाया : वोह ज़ू रेहूम महरम हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया : इस से मुराद ज़ू रेहूम हैं, महरम हों या न हों । और ज़ाहिर येही कौले दुवुम है, अहादीस में मुत्लक़न (या'नी बिगैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, कुरआने मजीद में मुत्लक़न (या'नी बिला क़ैद) ज़विल कुर्बा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूँकि मुख़्तलिफ़ द-रजात हैं (इसी तरह) सिलए रेहूम (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क) होता है । वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेहूम महरम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह हमेशा के लिये हराम हो) इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब । (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुताबिक़) (رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ٩ ص ٦٧٨)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

## “ज़ू रेहूम महरम” और “ज़ू रेहूम” से मुराद ?

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ सू-रतुल ब-करह की आयत 83 **وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا بَلَغَتِ الْمَرْءُ النِّكَاحَ فَلْيُتْرِكْ بِوَالِدَيْهِ بِعَافٍ فَيَكْفُرْتُم بِهِ فَجُزَاءُ مَا كَفَرْتُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكَ أَنْ تَقْتُلُوهُ أَوْ تَنكِحُوهُ فَالْمَرْءُ عَلَىٰ مَا عَمِلَ مِنْهُ إِنَّهُ كَانَ عِندَ رَبِّكَ مُبْصِرًا** और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों से।” के तहत “तफ़्सीरी नईमी” में लिखते हैं : और कुर्बा ब मा’ना कराबत है या’नी अपने अहले कराबत के साथ एहसान करो, चूँकि अहले कराबत का रिश्ता मां बाप के ज़रीए से होता है और इन का एहसान भी मां बाप के मुकाबले में कम है इस लिये इन का हक़ भी मां बाप के बा’द है, इस जगह भी चन्द हिदायतें हैं : **पहली हिदायत : ज़िल कुर्बा** वोह लोग हैं जिन का रिश्ता ब ज़रीअए मां बाप के हो जिसे “ज़ी रेहूम” भी कहते हैं, येह तीन तरह के हैं : **एक** बाप के कराबत दार जैसे दादा, दादी, चचा, फूफी वगैरा, **दूसरे** मां के जैसे नाना, नानी, मामूं, ख़ाला, अख़्याफ़ी (या’नी जिन का बाप अलग अलग हो और मां एक हो ऐसे भाई और बहन का) भाई वगैरा, **तीसरे** दोनों के कराबत दार जैसे हकीकी भाई बहन। इन में से जिस का रिश्ता क़वी होगा उस का हक़ मुक़द्दम। **दूसरी हिदायत :** अहले कराबत दो किस्म के हैं **एक** वोह जिन से निकाह हराम है, इन्हें ज़ी रेहूम महरम (या’नी ऐसा करीबी रिश्तेदार कि अगर इन में से जिस किसी को भी मर्द और दूसरे को औरत फ़र्ज किया जाए तो निकाह हमेशा के लिये हराम हो जैसे बाप, मां, बेटा, बेटी, भाई, बहन, चचा, फूफी, मामूं, ख़ाला, भान्जा, भान्जी वगैरा) कहते हैं, जैसे चचा, फूफी, मामूं, ख़ाला वगैरा। ज़रूरत के वक़्त इन की ख़िदमत करना फ़र्ज है न करने वाला गुनहगार होगा। **दूसरे** वोह जिन से निकाह हलाल जैसे ख़ाला, मामूं चचा की औलाद इन के साथ एहसान व सुलूक करना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शाश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सुन्नते मुअक्कदा है और बहुत सवाब लेकिन हर क़राबत दार बल्कि सारे मुसल्मानों से अच्छे अख़्लाक के साथ पेश आना ज़रूरी और इन को ईजा पहुंचानी ह़राम। (तफ़सीर ग़रिबी) तीसरी हिदायत : सुसराली दूर के रिश्तेदार जी रेहूम नहीं, हां इन में से बा'ज़ महरम हैं जैसे सास और दूध की मां, बा'ज़ महरम भी नहीं, इन के भी हुक्क हैं यहां तक कि पड़ोसी के भी हक़ हैं मगर येह लोग इस आयत में दाख़िल नहीं क्यूं कि यहां रेहूमी और रिश्ते वाले मुराद हैं। (तफ़सीरे नईमी, जि. 1, स. 447)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## “हुस्ने सुलूक” के सात हुरूफ़ की निस्बत से सिलए रेहूमी के 7 म-दनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़हा 559 ता 560 पर से “हुस्ने सुलूक” के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये :

### ﴿1﴾ किस रिश्तेदार से क्या बरताव करे

अह़दीस में मुत्लक़न (या'नी बिगैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, कुरआने मजीद में मुत्लक़न (या'नी बिला क़ैद) ज़विल कुर्बा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख़लिफ़ द-रजात हैं (इसी तरह) सिलए रेहूम (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क) होता है वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेहूम महरम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह हमेशा के लिये ह़राम हो) इन के बा'द

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरुद पाक पढ़े क़ियामत के दिन में उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ) गा। (अबिं बश्क़वाल)

बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब। (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुताबिक़) (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٩ ص ٦٧٨)

## ﴿2﴾ रिश्तेदार से सुल्ह की सूरतें

सिलए रेहूम (या'नी रिश्तेदारों के साथ सुल्ह) की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन को हदिय्या व तोहफ़ा देना और अगर इन को किसी बात में तुम्हारी इअ़ानत (या'नी इमदाद) दरकार हो तो इस काम में इन की मदद करना, इन्हें सलाम करना, इन की मुलाक़ात को जाना, इन के पास उठना बैठना, इन से बातचीत करना, इन के साथ लुत्फ़ो मेहरबानी से पेश आना। (نُزْر، ج ١ ص ٢٢٢)

## ﴿3﴾ परदेस हो तो ख़त भेजा करे

अगर येह शख़्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास ख़त भेजा करे, उन से ख़तो किताबत जारी रखे ताकि बे तअ़ल्लुकी पैदा न होने पाए और हो सके तो वतन आए और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुकात ताज़ा कर ले, इस तरह करने से महब्बत में इज़ाफ़ा होगा। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٩ ص ٦٧٨) (फ़ोन या इन्टरनेट के ज़रिए भी राबिते की तरकीब मुफ़ीद है)

## ﴿4﴾ परदेस में हो, मां बाप बुलाएं तो आना पड़ेगा

येह परदेस में है वालिदैन इसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, ख़त लिखना काफ़ी नहीं है। यूंही वालिदैन को इस की ख़िदमत की हाजत हो तो आए और उन की ख़िदमत करे, बाप के बा'द दादा और बड़े भाई का मर्तबा है कि बड़ा भाई ब मन्ज़िला बाप के होता है, बड़ी बहन और ख़ाला मां की जगह पर हैं, बा'ज उ-लमा ने चचा को बाप की मिस्ल बताया और हदीस : عَمُّ الرَّجُلِ صَوْنُ أَبِيهِ (या'नी आदमी का चचा बाप की मिस्ल होता है) से भी येही मुस्तफ़ाद होता (या'नी नतीजा निकलता) है। इन के इलावा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

औरों के पास ख़त भेजना या हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) भेजना क़िफ़ायत करता है। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٩ ص ٦٧٨)

### ﴿5﴾ किस किस रिश्तेदार से कब कब मिले

रिश्तेदारों से नागा दे कर मिलता रहे या'नी एक दिन मिलने को जाए दूसरे दिन न जाए وَعَلَى هَذَا الْقِيَاس (या'नी इसी पर अन्दाज़ा लगा कर) कि इस से महबूबत व उल्फ़त ज़ियादा होती है, बल्कि अक़िबा (या'नी क़राबत दारों) से जुमुआ जुमुआ मिलता रहे या महीने में एक बार और तमाम क़बीले और ख़ानदान को एक (या'नी मुत्तहिद) होना चाहिये, जब हक़ उन के साथ हो (या'नी वोह हक़ पर हों) तो दूसरों से मुक़ाबला और इज़्हारे हक़ में सब मुत्तहिद हो कर काम करें। (لُذْرَى ج ١ ص ٣٢٣)

### ﴿6﴾ रिश्तेदार हाज़त पेश करे तो रद कर देना गुनाह है

जब अपना कोई रिश्तेदार कोई हाज़त पेश करे तो उस की हाज़त रवाई करे, उस को रद कर देना क़त्ए रेहूम (या'नी रिश्ता तोड़ना) है। (ايضاً) (याद रहे ! सिलए रेहूम वाजिब है और क़त्ए रेहूम हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है)

### ﴿7﴾ सिलए रेहूम येह है कि वोह तोड़े तब भी तुम जोड़ो

सिलए रेहूम (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो हक़ीक़त में मुक़ाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए। हक़ीक़तन सिलए रेहूम (या'नी कामिल द-रजे का रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमते भेजता और उस के नाम ए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (त्रमिदी)

है, बे ए'तिनाई (या'नी ला परवाही) करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के हुकूक की मुराआत (या'नी लिहाज़ व रिआयत) करो। (رَدُّ الْمُتَحَارِجِ ص ११८)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### हुस्ने ज़न रखने का तरीका

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा सातों म-दनी फूल निहायत तवज्जोह के काबिल हैं, बिल खुसूस सातवें म-दनी फूल जिस में “अदले बदले” का जिक्र है इस के बारे में अर्ज़ है कि आज कल उमूमन येही “अदला बदला” हो रहा है। एक रिश्तेदार अगर इस को शादी की दा'वत देता है जभी येह उस को देता है अगर वोह न दे तो येह भी नहीं देता। अगर उस एक ने इस को ज़ियादा अफ़राद की दा'वत दी और येह अगर उस को कम अफ़राद की दा'वत दे तो इस का ठीकठाक नोटिस लिया जाता, ख़ूब तन्कीदें और गीबतें की जाती हैं। इसी तरह जो रिश्तेदार इस के यहां किसी तक़ीब में शिक़त नहीं करता तो येह उस के यहां होने वाली तक़ीब का बायकाट कर देता है और यूं फ़ासिले मज़ीद बढ़ाए जाते हैं। हालां कि कोई हमारे यहां शरीक न हुवा हो तो उस के बारे में अच्छा गुमान रखने के कई पहलू निकल सकते हैं, म-सलन वोह न आने वाला बीमार हो गया होगा, भूल गया होगा, ज़रूरी काम आ पड़ा होगा, या कोई सख़्त मजबूरी होगी जिस की वज़ाहत उस के लिये दुश्वार होगी वगैरा। वोह अपनी ग़ैर हाज़िरी का सबब बताए, या न बताए हमें हुस्ने ज़न रख कर सवाब कमाना और जन्नत में जाने का सामान करते रहना चाहिये। चुनान्वे फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ۔

(ابوداؤد ج ४ ص ३८८ حديث ६९९३)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोजे मुझ पर दुरूद को कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الإيمان)

**मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ इस हदीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मतालिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसलमानों से अच्छा गुमान करना, इन पर **बद गुमानी** न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक **इबादात** है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 621)

### जन्नत का महल उस को मिलेगा जो.....

**बिलफ़र्ज** हमारा रिश्तेदार सुस्ती के सबब या किसी भी वजह से जान बूझ कर हमारे यहां नहीं आया या हमें अपने यहां मद्दु नहीं किया बल्कि उस ने खुल्लम खुल्ला हमारे साथ बद सुलूकी की तब भी हमें बड़ा हौसला रखते हुए तअल्लुक़ात बर करार रखने चाहिएं, **हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सुल्लाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़ीमुश्शान है : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर जुल्म करे येह उसे मुआफ़ करे और जो इसे महरूम करे येह उसे अता करे और जो इस से क़तए तअल्लुक़ करे येह उस से नाता (या'नी तअल्लुक़) जोड़े ।

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٣ ص ١٢٠ حدیث ٣٢١٠)

**दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार को स-दक़ा देना अफ़ज़ल तरीन है**

बहर हाल कोई हमारे साथ हुस्ने सुलूक करे या न करे हमें हुस्ने सुलूक जारी रखना चाहिये । “मुस्नदे इमाम अहमद बिन हम्बल” की हदीसे पाक में है : **إِنَّ أَفْضَلَ الصَّدَقَةِ الصَّدَقَةُ عَلَى ذِي الرَّجْحِ الْكَاشِحِ -** या'नी बेशक अफ़ज़ल तरीन स-दक़ा वोह है जो दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार पर किया जाए ।

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٩ ص ١٣٨ حدیث ٢٣٥٨٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक कौरात (عيرازان) अत्र लिखता है और कौरात उहद पहाड़ जितना है।

## रिश्तेदार से जब सख़्त दुख पहुंचा

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपने ख़ालाजाद भाई ग़रीबो नादार मुहाजिर और बद्री सहाबी हज़रते सय्यिदुना मिस्तह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जिन का आप खर्च उठाते थे उन से सख़्त रन्ज पहुंचा और वोह येह कि उन्हों ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की प्यारी बेटी या'नी उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना अइशा सिद्दीक़ا رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर तोहमत लगाने वालों के साथ मुवा-फ़क़त की थी, इस पर आप (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने खर्च न देने की क़सम खाई। इस पर पारह 18 सू-रतुनूर की आयत नम्बर 22 नाज़िल हुई। वोह आयते मुबा-रका येह है :

وَلَا يَأْتِلْ أَوْلُوا الْقَضْلِ مِنْكُمْ  
وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَ  
الْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ  
اللَّهِ ۗ وَيَعْفُوا أُولِي صَفْحًا ۗ أَلَا  
تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ  
وَاللَّهُ عَفْوٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल इमान : और क़सम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले और गुन्जाइश वाले हैं क़राबत वालों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि मुआफ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह तुम्हारी बख़्शिश करे और अल्लाह बख़्शाने वाला मेहरबान है।

जब येह आयत सय्यिदे अलाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पढ़ी तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा : बेशक मेरी आरजू है कि अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) मेरी मग़िफ़रत करे और मैं मिस्तह (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी मौक़फ़ (या'नी बन्द) न करूंगा चुनान्चे आप (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने उस (माली



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جميع الجوانح)

तआवुन) को जारी फ़रमा दिया। इस आयत से मा'लूम हुवा कि जो शख्स किसी काम पर क़सम खाए फिर मा'लूम हो कि उस का करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और क़सम का कफ़ारा दे, हदीसे सहीह में येही वारिद है। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस आयत से हज़रते सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की फ़ज़ीलत साबित हुई, इस से आप की उलुव्वे शानो मर्तबत (या'नी रुत्बे की अ-ज़मत) ज़ाहिर होती है कि अल्लाह तआला ने आप (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) को (आयते कुरआनी में) **أَوْلُو الْفَضْلِ** (या'नी फ़ज़ीलत वाला इर्शाद) फ़रमाया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 563) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मरिफ़रत हो।

إِيمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीके अक्बर का है यारे ग़ार महबूबे खुदा सिद्दीके अक्बर का मक़ामे ख़्वाबे राहत चैन से आराम करने को बना पहलूए महबूबे खुदा सिद्दीके अक्बर का

(ज़ौके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तकरीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुशतमिल पेम्फ़लेट तकसीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अदद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

ग़मे मदीना, बकीअ, मरिफ़रत और बे हिसाब जन्नतुल फिरदौस में आक़ के पड़ोस का तालिब



16 मुहर्मुल हराम 1436 सि.हि.

10-11-2014

## तंगदस्ती से बचने का नुस्खा और जन्नत का खज़ाना

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :  
दो फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾ कोई घर वाले ऐसे नहीं कि आपस में सिलए रेहमी  
(या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करें फिर मोहताज  
(या'नी तंगदस्त) हो जाएँ! ﴿2﴾ चार चीज़ें जन्नत के खज़ानों में  
से हैं : स-दका छुपा कर देना, मुसीबत छुपाना, सिलए रेहमी  
करना और **لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ** कहना।<sup>2</sup>

1: الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج 1 ص 333 حديث 441

2: تاريخ بغداد ج 3 ص 404



**मक-त-घतुल मदीना**®

या 'घते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया खगीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net